UP Board Notes for Class 9 Hindi Chapter 1
कबीर (काव्य-खण्ड)

---

1. सतगुरु हम सँ.....भीजि गया सब अंग। (Imp.)
शब्दार्थ-रीझि करि = प्रसन्न होकर, **प्रसंग** = ज्ञान की बात, उपदेश ।
सन्दर्भ- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं **संत कबीर** द्वारा रचित **'साखी'** कविता शीर्षक से उधृत है।
प्रसंग-इस साखी में कबीर ने गुरु का महत्त्व बताते हुए कहा है कि गुरु की कृपा से ही ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है।
व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि सद्गुरु ने मेरी सेवा-भावना से प्रसन्न होकर मुझे ज्ञान की एक बात समझायी, जिसे सुनकर मेरे हृदय में ईश्वर के प्रति सच्चा प्रेम उत्पन्न हो गया। वह उपदेश मुझे ऐसा प्रतीत हुआ, मानो ईश्वर-प्रेमरूपी जल से भरे बादल बरसने लगे हों। उस ईश्वरीय प्रेम की वर्षा से मेरा अंग-अंग भींग गया। यहाँ कबीरदास जी के कहने का भाव यह है कि सद्गुरु के उपदेश से ही हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है और उसी से मन को शान्ति मिलती है। इस प्रकार जीवन में गुरु का अत्यधिक महत्त्व है।
काव्यगत सौन्दर्य

1. भाषा-सधुक्कड़ी
2. 2. रस-शान्त,
3. अलंकार-रूपक। छन्द-दोहा।

भावार्थ- प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने बहुत सुन्दर ढंग से ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में गुरु की महत्ता का वर्णन किया है।

2. राम नाम के पटतरे..... हौंस रही मन माँहिं।
शब्दार्थ-पटतरे = बराबरी । **देबे कौं** = देने के लिए, देने योग्य । **हौंस** = हौसला, उत्साह, उमंग। **क्या लै** = किस वस्तु ।
सन्दर्भ- प्रस्तुत साखी हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उधृत है।
प्रसंग- कबीर जी कहते हैं कि जिस गुरु ने हमें ज्ञान प्रदान किया है उसके बदले में मेरे पास देने को कुछ नहीं है।
व्याख्या- कबीरदास जी का कहना है कि गुरु ने मुझे राम नाम दिया है। उसके समान बदले में संसार में देने को कुछ नहीं है। तो फिर मैं गुरु को क्या देकर सन्तुष्ट करूं? कुछ देने की अभिलाषा मन के भीतर ही रह जाती है। भाव यह है कि गुरु ने मुझे राम नाम का ऐसा ज्ञान दिया है कि मैं उन्हें उसके अनुरूप कोई दक्षिणा देने में असमर्थ हूँ।
काव्यगत सौन्दर्य

1. ईश्वर प्रेम की प्राप्ति सद्गुरु की कृपा से ही सम्भव है और सद्गुरु की प्राप्ति ईश्वर की कृपा से ही होती है।
2. भाषासधुक्कड़ी, शैली-मुक्तक, रस-शान्त, छन्द-दोहा, अलंकार-अनुप्रास।

3. ग्यान प्रकास्या गुर ..... मिलिया आई।
शब्दार्थ-जिनि = नहीं। **कृपा** = अनुकम्पा । **बीसरि-विस्मृत/मिलिया** = मिले। सन्दर्भ-प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से लिया गया है।

प्रसंग- कबीर जी कहते हैं कि गुरु के मिलने से ही ज्ञान की प्राप्ति होती है और गुरु भगवान् की कृपा से ही मिलते हैं।
व्याख्या- कबीर का कहना है कि ईश्वर की महान् कृपा से गुरु की प्राप्ति हुई है। इस सच्चे गुरु ने तुम्हारे भीतर ज्ञान का प्रकाश दिया है। हे जीवात्मा कहीं ऐसा न हो कि तुम उसे भूल जाओ क्योंकि ईश्वर की असीम कृपा से तो 'सद्गुरु' की प्राप्ति हुई और उसकी कृपा से तुम्हें ज्ञान मिला है।
काव्यगते सौन्दर्य

1. **रस-** शान्त, छन्द-दोहा, अलंकार-अनुप्रास।
2. **भाषा-** सधुक्कड़ी।

4. माया दीपक..... उबरंत।
शब्दार्थ-पतंग = पतंगा। **एक-आध** = कोई-कोई । **इवें** = इसमें । **तें** = से। **उबरंत** = मुक्त हो जाते हैं।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित 'साखी' से अवतरित है।
प्रसंग- इस पद में कवि ने जीव और माया को क्रमश: पतिंगा और दीपक का रूपक मानते हुए माया की प्रबलता और गुरु के उपदेश की महत्ता को बतलाया है।
व्याख्या- यह संसार माया के दीपक के समान है और मनुष्य पतिंगे के समान है। जिस प्रकार पतिंगा दीपक के सौन्दर्य पर मुग्ध हो अपने प्राणों को त्याग देता है उसी तरह मनुष्य माया पर मुग्ध हो भ्रम में पड़ कर अपने को मिटा देता है। गुरु के उपदेश से शायद ही एक-आध इससे छुटकारा पा जाते हैं।
काव्यगत सौन्दर्य – भाषा-सधुक्कड़ी। रस-शान्त । छन्द-दोहा। अलंकार-अनुप्रास।

5. जब मैं था ..... न समाहिं।
शब्दार्थ-मैं = अहंकार । **प्रेम गली** = प्रेम साधना। **सांकरी** = संकुचित (संकरी) । **समाहिं** = समाहित करना।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उधृत है।
प्रसंग- प्रस्तुत दोहा संत कबीर की रचना है। कबीर गुरु तथा शिष्य के बीच एकात्मकता पर बल दे रहे हैं।
व्याख्या- कबीर कहते हैं-जब तक मुझमें 'मैं' अर्थात् अहंकार था तब तक मुझे अपने सद्गुरु से एकात्मभाव प्राप्त नहीं हो सका। मैं गुरु और स्वयं को दो समझता रहा। अत: मैं प्रेम-साधना में असफल रहा, क्योंकि प्रेम-साधना का मार्ग बड़ा सँकरा है उस पर एक होकर ही चला जा सकता है। जब तक द्वैत भाव-मैं और तू–बना रहेगा प्रेम की साधना, गुरुभक्ति सम्भव नहीं है।
काव्यगत सौन्दर्य – भाषा- सधुक्कड़ी। रस-शान्त । छन्द-दोहा। अलंकार-अनुप्रास, रूपक।

6. भगति भजन हरि..... सुमिरण सार।
शब्दार्थ- मनसा = मन से । **बाचा** = वचन से । **कर्मनाँ** = कर्म से। **सुमिरण** = भगवान् नाम का स्मरण । **सार** = तत्त्व।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी काव्य' में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित 'साखी' से उद्धृत है।
प्रसंग- संत कबीर ने इन काव्य पंक्तियों में जगत् की असारता और परमात्मा की नित्यता बताते हुए अहंकार को नष्ट कर हरि-भक्ति की प्रेरणा दी है।
व्याख्या- जीव के लिए परमात्मा की भक्ति और भजन करना एक नाव के समान उपयोगी है। इसके अतिरिक्त संसार में दुःख ही दुःख हैं। इसी भक्तिरूपी नाव से सांसारिक-दुःखरूपी सागर को

https://www.evidyarthi.in/

पार किया जा सकता है। इसलिए मन, वचन और कर्म से परमात्मा का स्मरण करना चाहिए, यही जीवन का परम तत्त्व है।

काव्यगत सौन्दर्य

भाषा – सधुक्कड़ी। **शैली** -उपदेशात्मक, मुक्तक। **छन्द** -दोहा। **रस** -शान्त । **अलंकार-** 'भगति भजन हरि नाँव है' में रूपक तथा अनुप्रास है। **भाव-साम्य-**गोस्वामी तुलसीदास ने भी ईश्वर के नाम-स्मरण के विषय में कहा है।

देह धरे कर यहु फलु भाई। भजिय राम सब काम बिहाई॥

7. कबीर चित्त चमंकिया..... बेगे लेहु बुझाई।

शब्दार्थ- चित्त चमंकिया = हृदय में ज्ञान की ज्योति जग गयी है। **लाइ** = अग्नि। **बेगे** = शीघ्र।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उधृत है।

प्रसंग- इसमें कबीरदास जी ने बताया है कि विषयरूपी अग्नि ईश्वर के नाम-स्मरण से ही शान्त हो सकती है।

व्याख्या- कबीर का कथन है कि इस संसार में सब जगह विषय-वासनाओं की आग लगी हुई दिखायी देती है। मेरा मन भी उसी आग से जल रहा है अथवा झुलस रहा है । या यूँ कहिये कि मेरे मन में भी विषय वासनाएँ उमड़ रही हैं। अपने मन को संबोधित करते हुए संत कबीर कहते हैं कि हे मन! तेरे हाथ में ईश्वर-स्मरण रूपी जल का घड़ा है। तू इस जल से शीघ्र ही वासनाओं की आग बुझा ले । तात्पर्य यह है कि ईश्वर के नाम-स्मरण से ही इन विषय वासनाओं से छुटकारा पाया जा सकता है।

काव्यगत सौन्दर्य

1. **ईश्वर के नाम-** स्मरण से विषय-वासना नष्ट हो जाती है।
2. **भाषा-** सधुक्कड़ी।
3. **शैली-** मुक्तक।
4. **छन्द-** दोहा।
5. **रस-** शान्त।
6. **अलंकार-**'हरि सुमिरण हाथू घड़ा' में रूपक है।

8. अंषड़ियाँ झाईं पड़ी ..... राम पुकारि-पुकारि।

शब्दार्थ-अंषड़ियाँ = आँखों में । **निहारि** = देखकर। **जीभड़ियाँ** = ज़िह्वा में।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उद्धृत है।

प्रसंग- इस दोहे में संत कबीर ने विरह से व्याकुल जीवात्मा के दुःख को व्यक्त किया है।

व्याख्या- कबीर का कथन है कि जीवात्मा बड़ी व्याकुलता से परमात्मा की प्रतीक्षा में आँखें बिछाये हुए है। भगवान् की बाट जोहते-जोहते उसकी आँखों में झाइयाँ पड़ गयी हैं पर फिर भी उसे ईश्वर के दर्शन नहीं हुए। जीवात्मा परमात्मा का नाम जपते-जपते थक गयी, उसकी जीभ में छाले भी पड़ गये, परन्तु फिर भी परमात्मा ने उसकी पुकार नहीं सुनी क्योंकि सच्ची लगन, सच्चे प्रेम तथा मन की पवित्रता के बिना इस प्रकार नाम जपना और बाट जोहना व्यर्थ है। **काव्यगत सौन्दर्य**

1. यहाँ कवि ने ईश्वर के वियोग में व्याकुल **जीवात्मा** का मार्मिक चित्रण किया है।
2. इनमें कवि की **रहस्यवादी भावना** दृष्टिगोचर होती है।
3. **भाषा-** सधुक्कड़ी।
4. **शैली-** मुक्तक।

5. **छन्द-** दोहा।
6. **रस-** शान्त।
7. **अलंकार-** पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास ।

9. झूठे सुख को .....कछु गोद।
शब्दार्थ- मानत हैं = मानते हैं, अनुभव करते हैं। **मोद** = हर्ष, खुशी । **चबैना** = चबाकर खाने की वस्तु, भुना हुआ चना अथवा चावल आदि।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उधृत है।
प्रसंग- प्रस्तुत साखी में कबीर जी ने सांसारिक सुख को मिथ्या बताते हुए इस संसार की असारता को स्पष्ट किया है।
व्याख्या- कबीर कहते हैं – अज्ञानी मनुष्य सांसारिक सुखों को, जो कि मिथ्या और परिणाम में दुःखदायी हैं, सच्चे सुख समझते हैं और मन में बड़े प्रसन्न होते हैं। ये भूल जाते हैं कि यह सारा जगत् काल के चबैने-चना आदि के समान हैं जिसमें से कुछ उसके मुख में जा चुका है और कुछ भक्षण किये जाने के लिए उसकी गोद में पड़ा हुआ है।
काव्यगत सौन्दर्य- भाषा- सधुक्कड़ी। रस- शान्त । छन्द- दोहा । अलंकार- अनुप्रास, रूपक।

10. जब मैं था तब .....देख्या माँहिं।
शब्दार्थ-मैं = अभिमान। **अँधियारा** = अज्ञान रूपी अंधकार। **माँहि** = हृदय के भीतर।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उधृत है।
प्रसंग- इस साखी में कबीरदास जी ने अहंकार को ईश्वर के साक्षात्कार में बाधक बतलाया है। वे कहते हैं
व्याख्या- जब तक हमारे भीतर अहंकार की भावना थी तब तक ईश्वर के दर्शन नहीं हुए थे, किन्तु जब हमने ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया तो अहंकार बिल्कुल ही नष्ट हो गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि ज्ञानरूपी दीपक के प्रकाश मिल जाने पर अज्ञानरूपी सारा अंधकार नष्ट हो गया है।
काव्यगत सौन्दर्य- भाषा- सधुक्कड़ी। रस- शान्त । छन्द- दोहा। अलंकार- अनुप्रास, रूपक।

11. कबीर कहा.....जामै घास।
शब्दार्थ-गरबियौ = गर्व करते हो। **आवास** = आवास, घर। **मैं** = भूमि।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उधृत है।
प्रसंग- इस साखी में कबीर ने संसार की नश्वरता की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा है कि अपने को उच्च स्थान पर पाकर गर्व नहीं करना चाहिए।
व्याख्या- इस संसार की नश्वरता को बतलाते हुए कबीरदास जी कहते हैं कि हे मनुष्य! तुम इस संसार में अपने ऊँचे स्थान पाकर क्यों गर्व करते हो। यह सारा संसार नश्वर है। एक दिन यह सारा वैभव नष्ट होकर धूल में मिल जायेगा और उस पर घास जम् श्येमी अथवा तुम्हें कल भूमि पर लेटना पड़ेगा अर्थात् तुम भी काल-कवलित हो जाओगे। लोग तुम्हें मिट्टी में दफना देंगे और उस पर घास जम जायेगी।
काव्यगत सौन्दर्य – भाषा- सधुक्कड़ी। **छन्द-** दोहा। **अलंकार-** उपमा और अनुप्रास । **रस-** शान्त।

12. यहुँ ऐसा संसार..... न भूलि।
शब्दार्थ-सैंबल = सेमर। **यहु** = यह।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से

https://www.evidyarthi.in/

उधृत है।
प्रसंग- इस साखी में कबीर ने संसार को सेमल का फूल बताते हुए अल्पकालीन सांसारिक रंगीनियों में न फँसने का उपदेश दिया है।
व्याख्या- संसार की असारता को बतलाते हुए कबीरदास जी का कहना है कि यह संसार सेमल के फूल की भाँति सुन्दर और आकर्षक तो है, किन्तु इसमें कोई गंध नहीं है। जिस प्रकार से तोता सेमल के फूल पर मुग्ध हो उसके सुन्दर फल की आशा में उस पर मँडराता रहता है और अन्त में उसे निस्सार रुई ही हाथ लगती है ठीक उसी प्रकार यह जीव इस संसार को अल्पकालीन रंगीनियों में भूला हुआ है। उसे इस झूठे रंग में सच्चाई को नहीं भूलना चाहिए। **काव्यगत सौन्दर्य**

1. **दिन दस का व्यवहार** = थोड़े समय का जीवन ।
2. **अलंकार** = उपमा।
3. **झूठे रंग न भूल** = संसार के कच्चे रंग अर्थात् नश्वरता को न भूलो।
4. **भाषा-** सधुक्कड़ी, **रस-** शान्त।

13. इहि औसरि ..... मुख बेह।
शब्दार्थ- षेह = राख। **औसरि** = अवसर। **चेत्या** = चेता।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उधृत है।
प्रसंग- प्रस्तुत साखी में कबीर ने कहा है कि मनुष्य योनि पाकर भी यदि समय रहते ईश्वर-स्मरण नहीं किया गया तो हमारा जीवन व्यर्थ है।
व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि हे जीव! तुम उस मनुष्य योनि में पैदा हुए हो जो बड़े ही सौभाग्य से प्राप्त होता है। इतना सुन्दर अवसर पाकर भी तुम सजग नहीं होते और 'राम नाम' का स्मरण नहीं करते। केवल पशु की भाँति अपने शरीर को पालन-पोषण कर रहे हो। यह समझ लो कि यदि समय रहते तुमने 'राम' का स्मरण नहीं किया तो अन्त में मिट्टी में ही मिलना होगा।
काव्यगत सौन्दर्य – भाषा-सधुक्कड़ी। रस-शान्त । छन्द-दोहा।

1. पशु ज्यूँ पाली देह-उपमा अलंकार।
2. 2. राम-नाम-अनुप्रास अलंकार।

14. यह तन काचा ..... आया हाथि।
शब्दार्थ-तन = शरीर। **काचा** = कच्चा। **कुंभ** = घड़ा।
सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उद्धृत है।
प्रसंग- इस साखी में कबीरंदास जी ने शरीर की नश्वरता का वर्णन किया है। वे कहते हैं –
व्याख्या- यह शरीर मिट्टी के कच्चे घड़े के समान है जिसे तुम बड़े अहंकार के साथ सबको दिखलाने के लिए साथ लिये घूमते हो, किन्तु एक ही धक्का लगने से यह टूटकर चूर-चूर हो जायेगा और कुछ भी हाथ नहीं लगेगा अर्थात् काल के धक्के से शरीर नष्ट हो जायेगा और वह मिट्टी में मिल जायेगा।
काव्यगत सौन्दर्य – भाषा-सधुक्कड़ी। रस-शान्त। छन्द-दोहा।

1. अलंकार रूपक तथा अनुप्रास है।
2. शरीर की नश्वरता का वर्णन है।

15. कबीर कहा गरबियौ.....भुवंग।

शब्दार्थ- बीछड़ियाँ = बिछुड़ जाने पर।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक **'हिन्दी काव्य'** में संकलित एवं कबीरदास द्वारा रचित **'साखी'** से उधृत है।

प्रसंग- देह के प्रति मनुष्य का मोह गहन होता है। कबीर ने इसी मोह के प्रति मनुष्य को सावधान किया है।

व्याख्या- कबीरदास जी कहते हैं कि तुम अपने शरीर की सुन्दरता पर इतना क्यों घमण्ड करते हो। तुम्हारा यह घमण्ड सर्वथा व्यर्थ है। मरने के पश्चात् फिर यह शरीर ठीक उसी प्रकार तुम्हें नहीं मिलेगा जिस प्रकार अपनी केंचुल को एक बार छोड़ देने के पश्चात् सर्प को वह पुनः प्राप्त नहीं होती। वह उसके लिए निरर्थक हो जाती है।

काव्यगत सौन्दर्य – भाषा-सधुक्कड़ी। रस-शान्त । छन्द-दोहा।

1. 'कबीर कहा', 'देही देखि' में अनुप्रास अलंकार ।
2. बीछड़या..... भुवंग-उपमा अलंकार।

https://www.evidyarthi.in/